वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य

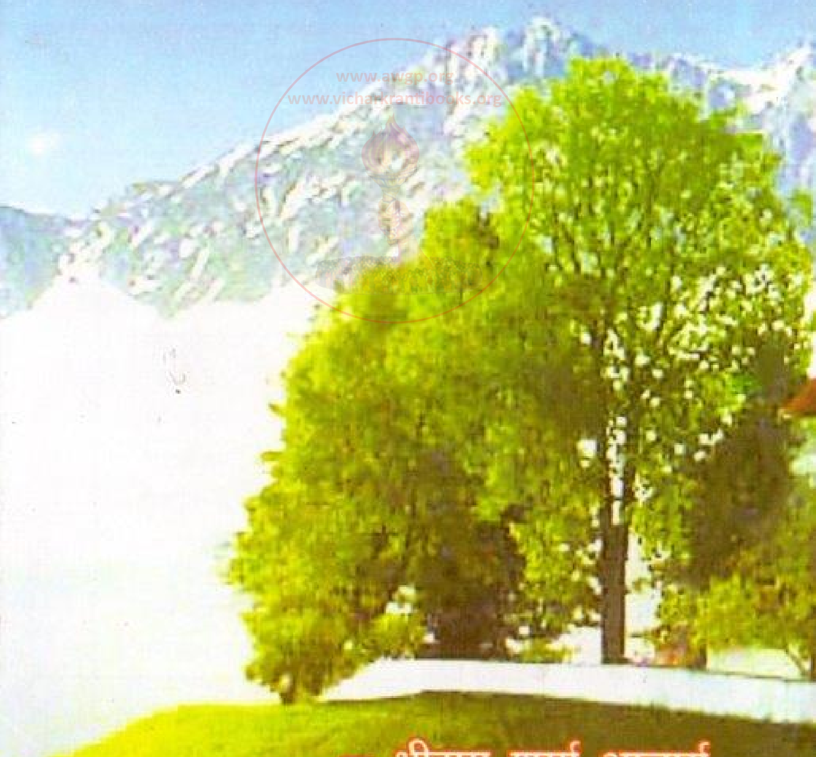

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

– श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य

हमारे धर्म और संस्कृति में जो स्थान विद्या–व्रत, ब्रह्मचर्य, ब्राह्मणत्व, गऊ, देव, मन्दिर, गंगा, गायत्री एवं गीता–रामायण आदि धर्म–ग्रन्थ–इन सबको दिया गया है, वैसा ही वृक्षों को भी महत्व दिया गया है। यह महत्व उन्हें उनके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों को देखते हुए ही दिया गया है। शास्त्रकार ने लिखा है–

रविश्चन्द्रो घा वृक्षा नद्योगावश्च सज्जनाः ।
ऐते परोपकाराय युगे दैवेन निर्मिताः ।।

परम पिता परमात्मा ने सूर्य, चन्द्रमा, बादल, वृक्ष, नदियाँ, गायें और सज्जन पुरुषों का आविर्भाव संसार में परोपकार के लिए किया है। सब सदैव परोपकार में ही रत रहते हैं।

उपरोक्त उक्ति में ऋषि ने अन्य परोपकारियों में वृक्ष को भी समान दर्जा दिया है और यह स्पष्ट किया है कि एक सज्जन पुरुष और वृक्ष में गुणों की दृष्टि से कोई भेद नहीं है। जिस प्रकार सज्जन व्यक्ति समाज के हित और कल्याण में तत्पर रहते हैं, वृक्ष भी उसी तरह "परोपकारातमिदंशरीर" का लक्ष्य बनाकर प्राणिमात्र के हित में अपने आपको तिल–तिल कर उत्सर्ग करते रहते हैं।

वृक्ष में देवत्व की प्रतिष्ठा स्वीकार करते हुए गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है–

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणं देवर्षीणं नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलोमुनिः ।।

अर्थात्–हे धनञ्जय ! सम्पूर्ण वृक्षों में मैं पीपल वृक्ष हूँ, देव ऋषियों में नारद, गन्धर्वों में चित्ररथ तथा सिद्धों में कपिल मुनि मैं ही हूँ।

उपरोक्त कथन में जहाँ भगवान कृष्ण ने अपने आपको पीपल वृक्ष में समासीन घोषित किया है, वहाँ उनके कथन से यह भी सिद्ध हो जाता है कि वृक्ष देवऋषियों, सिद्धों और गन्धर्वों के समकक्ष प्रतिष्ठित होते हैं। देवत्व के समाज में इनकी श्रेणी छोटी नहीं है। संसार में यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कल्याणकारी, परोपकारी, समदर्शी, फलदायी और वरदायी व्यक्तियों, देवों या गन्धर्वों को प्रतिष्ठा दी जाय तो वृक्ष भी उनसे कम सम्मान के पात्र नहीं हैं।

सम्भवतः इन्हीं बातों पर पूरी तरह विचार करने के बाद भारतीय आचार्यों ने वृक्षारोपण और वृक्ष की प्रतिष्ठा को महान पुण्य माना है और उनसे अनेक प्रकार के वरदान मिलने की बात कही है। धर्म–ग्रन्थों में ऐसे अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। विष्णु स्मृति के "कूपतडागखननं तदुत्सर्ग विधान" में बतलाया है कि–

वृक्षारोपयितुवर्वृक्षाः परलोके पुत्रा भवन्ति।
वृक्षप्रदो वृक्षप्रसूनैर्देवाहे प्रीणयित –
फलैश्चतिथीन् छाययाचाभ्यागतान्
देवे वषत्युदकेन पितृन।
पुष्प प्रदानेन श्रीमान् भवति।
कूपारामतड़ागेषु देवताततनेषु च।
पुनः संस्कारकर्त्ता च लभते मौलिकं फलन्॥

अर्थात्–जो मनुष्य वृक्षों का आरोपण करता है वे वृक्ष परलोक में उसके पुत्र होकर जन्म लेते हैं। वृक्षों का दान करने वाला वृक्षों के पुष्पों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करता है और मेघ के बरसने पर छाता के द्वारा अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है। पुष्पों का दान करने से समृद्धिशाली होता है। कुआँ, उद्यान, तालाब और देवायतन का पुनः संस्कार अर्थात् जीर्णोद्धार कराने वाला व्यक्ति मौलिक फल प्राप्त किया करता है अर्थात् उनके नूतन निर्माण कराने के समान ही पुण्य फल पाता है।

उसके विपरीत जो वृक्षों को नष्ट करते या काटते हैं, उनकी निंदा भर्त्सना की गई है। ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है–

मा काकम्बीरमुहह्रो वनस्पतिन शस्तीतिर्वि हि नीनशः।
मोत सूरी अह एबा चन ग्रीवा आदधते वेः॥

ऋग्. ६।४८।१७

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थात्–जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पखेरुओं की गरदन मरोड़ कर उन्हें दुःख देता और मार डालता है, तुम वैसे न बनो और इन वृक्षों को दुख न दो, इनका उच्छेदन न करो ये पशु–पक्षियों और जीव–जन्तुओं को शरण देते हैं ।

हम उन ऋषियों के आदेशों का पालन करते रहे हैं । भले ही उनके सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को न जान पाये हों, पर उन आज्ञाओं का पालन करने से उन लाभों से तो लाभान्वित रहे ही हैं, हमारे देश में जब से उन आदेशों पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाने लगा तभी से भारतीय जीवन में मलीनता का प्रवेश हुआ है । वृक्षों के प्रति अवहेलना भी उनमें से एक महत्वपूर्ण कारण है । तुलसीदास जी ने रामराज्य के सुखों का वर्णन करते हुए लिखा है–

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन ।
रहहिं एक संग गज पंचानन ।।
लता विटप माँगे मधु चवही ।
मन भावती धेनु पय स्रवही ।।

अर्थात्–उस समय जंगलों में वृक्ष खूब फलते थे । वृक्ष और लताऐं मनोवांछित फल देते थे । गायें दूध देती थीं आदि ।

यह स्थिति तब रही होगी जब वृक्षों के प्रति प्रजा में आदर का भाव रहा होगा । वृक्षों को अधिक मात्रा में लगाया जाता रहा होगा । उस समय की प्रकृति भी सन्तुलित थी, समय पर वर्षा होती थी । नदियाँ बराबर बहती रहती थीं । समुद्र अपनी मर्यादा में रहता था । इन सब सुविधाओं के पीछे वृक्षों एवं वनस्पतियों का बड़ा हाथ था और हमें इसका अनायास ही लाभ इसलिए मिल जाता था कि हम उन आदेशों का भलीभाँति पालन करते थे जो मानवीय जीवन की सुव्यवस्था के लिए उपयोगी और आवश्यक थे । अब जब कि इन आज्ञाओं की अवज्ञा ही हो रही है, तो उसके सामूहिक दुष्परिणाम भी हमारे सामने हैं, हमारे जीवन का हर क्षेत्र कष्ट और कठिनाइयों से घिरा हुआ है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृक्षों के विपुल वरदान–

धरती माता को शस्य–श्यामला कह कर उसकी वन्दना की गई है। यह पुण्य नाम उसे इसलिए दिया गया था कि वह वृक्ष बेल और लता गुल्मों से सदैव आच्छादित रहा करती थी। ऊँचाई से इसका पिण्ड सर्वत्र हरा–भरा नजर आता है। वह शोभा बड़ी सुन्दर लगी। कवि ने उसे भाव नेत्रों से देखा तो वह इस मनोहर रूप पर मुग्ध होकर रह गया तभी उसने इसे शस्य–श्यामला की उपाधि से विभूषित किया।

वृक्ष प्रकृति के परिधान–

पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले रूसी अन्तरिक्ष यात्री यूरी गगारिन सद्भावना यात्रा पर भारतवर्ष आये तो पत्रकारों ने उनसे अन्तरिक्ष यात्रा के संस्मरण पूछे। गगारिन ने बताया कि सम्भवतः पृथ्वी ही समस्त खगोल में एक ऐसा ग्रह पिण्ड है, जिससे सुन्दर और कोई दूसरा नक्षत्र नहीं। इस सौन्दर्य का कारण उन्होंने इसकी प्राकृतिक सुषमा हरितमा वृक्षावली को ही बताया।

वृक्ष न होते तो यह धरती भी एक उजड़ी एवं सुनसान जैसी स्थिति में रही होती। तब अन्तरिक्ष वासियों को तो क्या धरती वालों को ही यहाँ किसी सौन्दर्य के दर्शन न होते। यहाँ सर्वत्र उदासी–सी दिखाई देती और उसका प्रभाव लोगों की मानसिक स्थिति पर भी पड़े बिना न रहता। माघ–फाल्गुन के महीनों में जब पतझड़ हो जाता है और वृक्षों के केवल ठूँठ मात्र रह जाते हैं, तो न जाने कैसी आत्मिक आकुलता उत्पन्न होती है। निर्वसन प्रकृति से मनुष्य की आत्मा में दुख की अनुभूति होना महत् आध्यात्मिक तथ्य है जबकि दूसरी ओर सावन–भादों के महीनों में आन्तरिक उल्लास, प्रगाढ़ प्रेम भावनाऐं, प्रसन्नता, सरसता आदि के उद्‌गार अपने आप उमड़ने लगते हैं। उन दिनों प्रकृति सर्वत्र हरी–भरी जान पड़ती है। उसी के प्रभाव स्वरूप इस प्रकार की सरस भावनाऐं जागृत होती हैं।

वृक्ष आध्यात्मिक–प्रशिक्षक–

पुराने जमाने में विद्यालय वहीं चलाये जाते थे जो स्थान चारों ओर से वृक्षों से आच्छादित होते थे। वृक्षावली बढ़ाने के प्रयत्न भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सदैव चलते रहते थे । गुरुकुलों में वृक्षारोपण उत्सव मनाये जाते थे और बड़े–बड़े वृक्ष पीपल, बरगद, नीम, आम, इमली आदि के पौधे लगाये जाते थे । विद्यार्थीगण उनकी नियमित देखरेख रखते थे, उन्हें सब तरह से नष्ट होने से बचाया जाता था । वृक्षों को इतना महत्व देने का यही कारण था कि उनके बीच रहने से आध्यात्मिक भावनाऐं जागृत होती थीं । लोगों के मन सुसंस्कारित बने रहते थे । इनसे आन्तरिक सौन्दर्य जागृत होता था । आत्म–प्रेरणा मिलती थी । बच्चों के विकासोन्मुख मस्तिष्क पर इन प्रेरणाओं की नींव गहरी हो जाती थी, फलस्वरूप कठिन परीक्षा की घड़ियों में भी वह सदाचार से विचलित न होते थे ।

वृक्षों द्वारा सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रशिक्षण निरन्तर मिलता रहे इसके लिए केवल विद्यालयों में ही उनकी बहुतायत न होती थी । हर आश्रम, गाँव, मन्दिरों तथा सार्वजनिक स्थानों को भी वृक्षों से आच्छादित रखा जाता था । भारतवर्ष के इतिहास की अनेक विलक्षणताओं में यह भी एक विलक्षण, तथ्यपूर्ण और वैज्ञानिक बात रही है । जो वृक्ष दुनियाँ में कहीं नहीं पाये जाते वे भारतवर्ष में मौजूद हैं । नीम तथा पीपल केवल भारतवर्ष में ही पाये जाते हैं । भारतीय संस्कृति के बारे अपना मत प्रकट करते हुए न्यूयार्क के प्रसिद्ध विद्वान मि. डेलमार ने लिखा है–'पश्चिमी संसार जिन बातों पर अभिमान करता है, वे असल में भारतवर्ष से ही वहाँ गई है और तरह–तरह के फल–फूल पेड़ और पौधे जो इस समय यूरोप में पैदा होते हैं, हिन्दुस्तान से ही ले जा कर वहाँ लगाये गये ।" भगवान बुद्ध द्वारा लंका में लगाया गया वट वृक्ष आज भी कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है । संसार के अनेक देशों को यहाँ से वृक्ष, फल और फूल के पौधे भेजे गये, इसका मुख्य उद्देश्य सारे संसार में आध्यात्मिकता के मूल को ही विकसित करना रहा है ।

जलदाता जीवन दाता–

अब धीरे–धीरे पहाड़ों पर बर्फ जमना कम होता चला जा रहा है । कुछ समय पूर्व जितनी मोटी बर्फ की तह जमती थी, उतनी नहीं जमती । पहाड़ों पर जमी हुई यह बर्फ गर्मियों के दिनों में पिघलकर नदियों में बहती रहती थी, फलस्वरूप उत्तर भारत की नदियों में पूरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाँच साल भर पानी की कमी नहीं होती थी। उससे सिंचाई के लिए नहरों को पूरा पानी मिलता रहता था, पर अब अधिकारीगण इस बात से काफी चिन्तित हैं। बर्फ न पड़ने के कारणों पर काफी समय तक विचार और अनुसंधान करने पर वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पिछले कई वर्षों से पेड़ बहुत तेजी से काटे गये हैं इसके फलस्वरूप प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ गया है।

भूगोल शास्त्री इस बात को जानते हैं कि जब भाप बनकर बादल आसमान में मँडराते हैं तो उस समय वृक्षों से एक प्रकार की शीतल प्राणवायु निकल कर आसमान की ओर बढ़ती है, यह हवा बादलों को स्पर्श करती है, तभी वर्षा होती है। घने जंगलों वाले इलाकोंमें जोरदार वर्षा होती है। पहाड़ों के ऊपर मानसून मँडराता रहता है, वह भी वृक्षों और वायु की प्रतिक्रियाओं से बर्फ की शकल धारण करता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष जल वृष्टि और अप्रत्यक्ष रूप से नदियों में जल पहुँचाने में पेड़ों का प्रमुख हाथ रहता है।

जल की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध न हो तो उससे कृषि का सारा कारोबार ही चौपट हो सकता है। इस प्रकार वृक्ष भारतवर्ष जैसे कृषि प्रधान देश के लिए जीवनदाता से कम नहीं हैं। वर्षा के द्वारा ४५ प्रतिशत भाग खेती की सिंचाई का प्रत्यक्ष और १।५ खेती की नहरों द्वारा सिंचाई का अप्रत्यक्ष उत्तरदायित्व बेचारे पेड़ सम्हालते हैं, इसके लिए उनके प्रति जितनी अधिक कृतज्ञता प्रकट की जाय कम ही है।

वृक्ष नाम रेगिस्तान–

रेगिस्तानों में पेड़ नहीं होते, ऐसा कहा जाता है। वस्तुतः कहना यह चाहिए कि जहाँ पेड़ नहीं होते वहाँ रेगिस्तान होते हैं। पेड़ों के अभाव में हवा के वेग, शुष्कता और मौसम के असन्तुलन के कारण ही रेगिस्तान पैदा होते हैं। बरसात का आकर्षण करने के लिए पेड़ न होने से राजस्थान के इलाके में रेगिस्तान तेजी से बढ़ता जा रहा है, इससे राज्य सरकार बड़ी चिन्तित है। रेगिस्तान के प्रसार को रोकने के लिए जहाँ बाहर से जल लाने की व्यवस्था की गई है, वहाँ सरकार इस प्रयत्न में भी है कि इस इलाके में वृक्षारोपण आन्दोलन को अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गतिशील बनाया जाय, ताकि वहाँ के रेगिस्तानी प्रसार को रोका जा सके और जलवायु में परिवर्तन लाकर उसे समाप्त किया जा सके । ऐसा हो जायेगा तो हजारों-लाखों एकड़ जमीन कृषि के लिए निकल आयेगी और हजारों किसानों को काम मिल जायगा । इससे न केवल समृद्धि ही बढ़ेगी वरन् खाद्य-समस्या का समाधान भी होगा ।

वन उद्योग से राष्ट्रीय सम्पत्ति का विकास-सन् १९५४-५५ में भारतीय वनों का कुल क्षेत्रफल २.८१ लाख वर्गमील था जो देश के क्षेत्रफल का लगभग २२ प्रतिशत था । यह प्रतिशत अन्य देशों के प्रतिशत से अपेक्षाकृत कम है । इनकी उत्पादन क्षमता भी अन्य देशों के वनों की औसत उपज से काफी कम है । इसी वर्ष २१ करोड़ ६७ लाख ८४ हजार रुपये की ५० करोड़ ७० लाख ५४ हजार घनफुट इमारती लकड़ी शेष लट्ठे, लुग्दी तथा दियासलाई के उपयोग की लकड़ी थी । ३० करोड़ ८३ लाख ४६ हजार घनफुट ईंधन उपयोगी लकड़ी तथा ६ करोड़ ७२ लाख १३ हजार घनफुट कोयला उपयोगी लकड़ी थी ।

प्लाईवुड के कच्चे माल, दियासलाई तथा कागज की आवश्यक सामग्री के साथ-साथ राल, गोंद, शहद तथा औषधि सम्बन्धी अनेक जड़ी-बूटियाँ भी प्राप्त होती हैं । बीड़ी उद्योग अधिकांश वनों के ही भरोसे चल रहा है । प्रतिवर्ष लगभग डेढ़ करोढ़ रुपये का बाँस और बेंत, ५५ लाख रुपये के रेशे वाले पदार्थ १ करोड़ रुपये का गोंद तथा राल और ६ करोड़ रुपये का अन्य फुटकर सामान उपलब्ध होता है ।

इसके अतिरिक्त लगभग ५० लाख व्यक्तियों को इन वनों से ही आजीविका उपलब्ध होती है । पहाड़ी इलाकों में जहाँ कृषि कार्यसम्भव नहीं है वहाँ लोग वन उद्योगों के आसरे ही अपना पेट पालते हैं । शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ कागज की आवश्यकता भी बढ़ेगी और उसके लिए वन-सम्पत्ति की समृद्धि की आवश्यकता होगी ।

मकानों के लिए लकड़ियाँ-

परमार्थी वृक्षों की कृपा से हम घरों में बड़ी सुविधापूर्वक बरसात, जाड़े और ग्रीष्म की तपन से बचकर रहते हैं । अब ईंट और सीमेण्ट का उपयोग होने लगा है, पर व्यवस्था इतनी मँहगी है कि सब लोग पक्के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मकान नहीं बनवा सकते । उनमें इतना अधिक खर्च पड़ता है कि ९० प्रतिशत सामान्य श्रेणी के व्यक्ति पक्के घर नहीं बनवा सकते । आज से कुछ वर्ष पूर्व जब वृक्षों की हमारे यहाँ कोई कमी न थी और पक्की छतों वाले मकानों का प्रचलन न हुआ था तब लोग बड़ी आसानी से कम खर्च में ही मकानों की व्यवस्था कर लेते थे । वृक्षों की बहुतायत से की गई कटाई ने तो अब मकान की समस्या को भी कठिन बना दिया है ।

शहरों में भारी किराये पर मकान मिलने का कारण एक ही कि इमारती लकड़ी का अभाव, जिसके कारण मकान बनवाने में लागत बढ़ जाती है, फलस्वरूप मकान मालिक उसका किराया भी डटकर वसूल करते हैं । अधिक खर्चीले होने के कारण हर कोई मकान बनवा भी नहीं सकता इसलिए वे भी मँहगे पड़ते हैं । यह समस्या अभी तक गाँव में नहीं थी । गल्ले की मँहगाई और कृषि–उत्पादन में काफी वृद्धि हुई और उससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई तो उनकी अनेक समस्यायें भी बढ़ गईं । मकान की समस्या उनमें मुख्य है । लकड़ी की कमी के कारण अब वहाँ भी पक्की छतों वाले मकान बनवाने के लिए लोगों को विवश होना पड़ता है । इसका परिणाम होता है कि लोगों को अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा इसमें लगाकर शेष स्वास्थ्य एवं अर्थ विकास के साधनों में रोक लगा देनी पड़ती है, या फिर टूटे–फूटे मकानों में कष्टकर स्थिति में दिन गुजारने पड़ते हैं । ऐसी समस्याऐं गाँवों में ७० प्रतिशत जनता के सामने हैं और ऐसा अनुमान किया जाता है कि यदि वृक्षों को काटने की तेजी इसी तरह बनी रही तो एक दिन यह समस्या बड़ा विकराल रूप धारण करेगी और तब लकड़ियों के मकान कहीं देखने को भी नहीं मिलेंगे । मकानों के किराये और उन्हें बनवाने में कितना अधिक खर्च होगा इसका अभी से अन्दाज लगाया जा सकता है ।

ईंधन और खाद–

वृक्षों की सूखी डालियाँ हमारे बड़े काम की होती हैं । उनका मोटे तने का भाग मकानों की छत पाटने, पाटा, हल, बैलगाड़ी, किवाड़ आदि विविध उपयोगी वस्तुऐं बनाने के काम आ जाता है, तो पतली लकड़ियों से भोजन पकाने का काम चलता है । किन्तु वृक्षों के अभाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से उत्पन्न यह परेशानी भी हम स्पष्ट देख रहे हैं। शहरों में जलाने की लकड़ियों के भाव एक डेढ़ रुपये प्रति मन से बढ़कर ३८ रुपये मन तक पहुँच गये हैं और गाँवों में इस कमी को पूरा करने के लिए ५० प्रतिशत गोबर की बहुमूल्य खाद को उपले बनाकर जला दिया जाता है।

कदाचित इतनी खाद न जलती और लकड़ी का ईंधन मिलता रहता तो खेतों के लिए जितनी खाद अब मिल रही है, उतनी ही खाद और मिल जाती जिससे उतनी ही फसल में ड्यौढ़ा अन्न–उत्पादन किया जा सकता था । दूसरी रासायनिक खादों की अब बहुत चर्चा चल रही है, पर वे सब गोबर की खाद के आगे भीख माँगते हैं। इतनी सुन्दर, कम दाम की और सरलता से उपलब्ध हो जाने वाली दूसरी खाद नहीं है। इसमें मिट्टी को खारी–खराब करने वाला कोई दोष नहीं है अतः इसकी रक्षा कृषि–हित में अनिवार्य है पर यह तभी सम्भव है, जब ईंधन की लकड़ियों का अभाव न हो और उसके लिए वृक्षों की सघनता हो।

यह तो रही अप्रत्यक्ष बात, प्रत्यक्ष रूप से भी वृक्ष हमें सुन्दर प्राकृतिक खाद प्रदान करते हैं। पतझड़ के दिनों में सारे वृक्षों की पत्तियाँ जब गिर जाती हैं तो ये कूड़े की शक्ल में इधर–उधर बिखर जाती हैं, कुछ बगीचे के आस–पास ही जमा हो जाती हैं। इसके बाद वर्षा ऋतु आती है। वर्षा ऋतु में सारी पत्तियाँ सड़–गलकर मिट्टी में मिल जाती है। जमीन उनका उपजाऊ अंश स्वयं सोख लेती है।यह प्राकृतिक खाद वह है जो खेतों को बिना खाद दिये हुए भी उनसे कुछ न कुछ अनाज पैदा किया जाता रहा है।

मानव जाति के अनन्य सेवक वृक्ष

वृक्षों की आध्यात्मिक प्रेरणा का लाभ प्राप्त करने के लिए प्राचीनकाल में गुरुकुल, गुरु आश्रम, मन्दिर, जलाशय आदि वृक्ष–कुञ्जों से आच्छादित हुआ करते थे। उनकी शीतल छाया में विद्यार्थी पढ़ा करते थे। प्रकृति की सघन शोभा उनके मस्तिष्क में सदाचार, संयम, सेवा, सुरुचि, शुचिता और सुव्यवस्था के भाव भरा करती थी।

जो लोग भूगोल पढ़ते हैं, उन्हें मालूम होगा कि अब पहाड़ों पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बर्फ का जमना धीरे–धीरे कम होता जा रहा है । पहले जितनी मोटी परत जमती थीं, अब नहीं जमतीं । गर्मी आती है, सूर्य तपता है तो यह बर्फ थोड़े समय में ही गल कर बह जाती है और बाद में नदियाँ सूख जाती हैं । उत्तर भारत को वर्ष भर पानी देने वाली गंगा और यमुना में भी अब पहले जितना पानी नहीं आता । इसका मूल कारण है वृक्षों और वनों का बढ़ता हुआ अभाव । हरे वृक्षों वाले वन आपको आकर्षित करते हैं और पानी बरसने में सहायक होते हैं । वृक्षों की संख्या घटने से वर्षा की सघनता भी कम होने लगी और उसका दुष्प्रभाव अब सिंचाई जैसे महत्वपूर्ण कार्यों पर पड़ रहा है ।

वृक्ष अधिक हों तो जल भी अधिक मिले और घरों में प्रयोग के लिए लकड़ियाँ भी मिलती रहें । इमारती लकड़ी के अभाव में भवन–निर्माण बहुत मँहगा हो गया है । भारतीय स्थापत्य कला का सम्पूर्ण गौरव ही नष्ट होता जा रहा है क्योंकि अब वह बहुत मँहगा कार्य हो गया है, पर साधारण काम जैसे रोटी आदि बनाने के लिए भी लकड़ियाँ पर्याप्त उपलब्ध नहीं होतीं । फलतः गाँवों की आधी खाद ईंधन के रूप में जला दी जाती है, उसका दुष्प्रभाव कृषि की उपज पर पड़ता है । पहले की अपेक्षा खेती की उपजाऊ शक्ति भी अब आधी रह गई है ।

भगवान शंकर की प्रतिष्ठा इसलिए हुई थी कि उन्होंने देवत्व की रक्षा के लिए विष पान किया था । वृक्ष जो मानव जाति की रक्षा के लिए निरन्तर विष पीते रहते और अमृत–तत्त्व देते रहते हैं, उनकी प्रतिष्ठा की ओर बहुत थोड़े वायु का दबाव रहता है, उतना ही दबाव कार्बनडाई आक्साइड जैसे दूषित गंदी और सड़ी गैसों का होना चाहिए । यदि यह गन्दगी नैसर्गिक रूप से दबाव डालती रहे, तो मनुष्य की आयु आधी रह जाये । स्वास्थ्य खराब हो जाये । प्राण और शारीरिक शक्ति नष्ट हो जाये । रोग बढ़ जायें और रोग निरोधक क्षमता बिल्कुल घट जाये ।

अब यह परिस्थिति बिगड़ गई है । कल और भी बिगड़ेगी क्योंकि कार्बनडाई आक्साइड और हम जो गन्दगी पैदा करते हैं, उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषपान करने वाले वृक्ष कम होते जा रहे हैं । वृक्ष न रहेंगे तो इस ढेर सारी गन्दगी का दबाव मनुष्य की सहन-शक्ति से बाहर हो जायेगा । उसकी आयु, स्वास्थ्य, शक्ति, शरीर सब पर बुरा प्रभाव पड़ेगा ।

वृक्ष स्वच्छ और ताजी वायु प्राणियों को देते रहते हैं, उससे शरीरों का पोषण होता है । वृक्ष फल देते हैं जिससे खाद्य समस्या का निदान होता है । प्रकृति की मधुरता, दया और मातृत्व का अनुभव हमें वृक्षों ने ही कराया । कितने-कितने सुन्दर, रस-युक्त, स्वादिष्ट व शक्ति-वर्धक फल परमात्मा ने मनुष्य को दिये हैं, उनकी कल्पना करें, तो हृदय श्रद्धा से नत हो उठता है ।

पर कोरी श्रद्धा से काम भी तो नहीं चलता । जहाँ वृक्षों के सैकड़ों अनुदान और वरदान हमें मिलते हैं, वहाँ हमारा भी तो कर्तव्य है कि उनकी वंशावली बढ़ायें । पुराणों में यह बात धार्मिक महत्व देकर प्रकारान्तर से कही गई है । युग निर्माण योजना ने उसे विज्ञान और बुद्धि-संगत रूप में प्रस्तुत किया है, उससे कोई भी व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता । इसलिए वृक्षारोपण को एक परम पुनीत कर्तव्य मान कर उसे एक अभियान के रूप में चलाया जाना चाहिए । वृक्षों के परिधान पृथ्वी माता की शोभा बढ़ाते हैं, उसके लिए हमें भी योगदान करना चाहिए ।

वृक्षों से आर्थिक लाभ भी कम नहीं

आन्ध्र प्रदेश के नलगोण्डा जिले के ऐरा पहाड़ गाँव के श्रीसुधीर रेड्डी को १९६५ में आम के लिए 'उद्यान पण्डित' की उपाधि से विभूषित किया गया । इस समाचार ने वृक्षारोपण और उत्पादन के प्रति सैकड़ों लोगों का ध्यान आकर्षित किया । 'कृषि में अधिक लाभ है, फल उत्पादन में कम' इस भ्रान्त धारणा को श्री सुधीर रेड्डी ने खण्डित करके रख दिया ।

२६ वर्षीय युवक रेड्डी के पास इस समय २६० हेक्टर भूमि में आम के बगीचे हैं । उनमें मलजोवा, नीलम, वैनिशान, तोतापरी और अल्फान्सों बहुसंख्यक जातियों के आमों के वृक्ष हैं । पढ़ने-लिखने के बाद श्री रेड्डी को १९५९ में बाग लगाने की धुन सवार हुई । उनकी ३८० हेक्टर जमीन बंजर पड़ी थी । गाँवों में हर किसान के पास कुछ न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ बंजर या कम उपजाऊ भूमि होती है । चाहें तो उसका वृक्षारोपण में अच्छा उपयोग किया जा सकता है किन्तु आलस्यवश लोग उस भूमि का उपयोग नहीं कर पाते । श्री रेड्डी के पास उस समय एक भी आम का पेड़ नहीं था । उन्हें इस बीच वृक्षारोपण की उपयोगिता का परिचय मिला तो उन्होंने उसमें सक्रिय रुचि ली ।

प्रारम्भ में उन्होंने ८ हेक्टर भूमि में आम के वृक्ष लगाये । कुछ में चीकू आदि के पौधे लगाये । उनकी पर्याप्त देखभाल, सिंचाई और गुड़ाई भी की । उसके परिणाम थोड़े ही दिनों में देखने को मिले । १९६५ में जब उन्होंने आम उत्पादन प्रतियोगिता में भाग लिया, उनके कुछ पेड़ों में ५ हजार तक आम पाये गये । आम देखने में सुन्दर, बड़े और स्वादिष्ट होते हैं । इनसे श्री सुधीर रेड्डी को लगभग ढाई हजार प्रति हेक्टर की आय होती है ।

बाग और वृक्ष लगाने में जमीन फँसने का जिन्हें डर रहता है, उन्हें इस समाचार से प्रकाश मिलेगा कि वृक्षों से मनुष्य को न कभी घाटा हुआ न होगा । उनसे जलाने के लिए लकड़ियाँ मिलती हैं । छतें पाटने के लिए शहतीरें और धन्नियाँ मिलती हैं । खाने और विक्रय के लिए भी स्वादिष्ट फल उपलब्ध होते हैं । औषधियाँ और तेल आदि मिलते हैं, सैकड़ों लोगों का जीवन लकड़ी, फल आदि के विक्रय के द्वारा वृक्षों पर ही आधारित रहता है । गाँवों में फसलों की रक्षा और सुशीतल छाया के लिए भी यह वृक्ष अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक हैं ।

वृक्षों की उपयोगिता का लाभ उठाने के लिए सरकारी तौर पर वन-विभाग ही काम करता है । १९६१-६२ में भारतीय वन उद्योग से लगभग ५०१३७५००० रुपये के मूल्य की १६१८७००० घनमीटर इमारती तथा दूसरी लकड़ी उपलब्ध हुई ।

वृक्षों से कागज, दियासलाई, प्लाई वुड लकड़ी उद्योगों के लिए कच्चा माल गोंद, राल, चमड़ा कमाने का सामान, जड़ी-बूटियाँ भी प्राप्त होती हैं । १९६१-६२ में वनों से लगभग १२१०६१००० रुपये के मूल्य की उपर्युक्त तथा अन्य फुटकर वस्तुऐं प्राप्त हुईं । वृक्षों से और अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय वन-उद्योग आयोग भी नियुक्त किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया है । यह आयोग वृक्षारोपण, वनों की रक्षा की स्थिति का अध्ययन और उनके विकास के प्रयत्न जुटायेगा ताकि राष्ट्रीय आय बढ़ाई जा सके ।

वृक्षारोपण के सार्वजनिक महत्व और व्यक्तिगत लाभ का कुछ अनुमान इन पंक्तियो में मिलता है, पर उसका पूरा और सही मूल्यांकन तो तभी किया जा सकता है, जब स्वयं भी कुछ वृक्ष लगा कर देखें । पहले लोग धार्मिक एवं आध्यात्मिक शान्ति के लिए वृक्ष लगाया करते थे, वह लाभ तो अब भी सुरक्षित और सुनिश्चित हैं, हमें यह भी देखना चाहिए कि वृक्ष आर्थिक सहयोगी भी बनते हैं या नहीं । यदि पूरे मन और उत्साह के साथ श्री सुधीर रेड्डी की तरह हम वृक्षों की सेवा के लिए तैयार हों तो वृक्षों के आशीर्वाद और उनकी कृपा के सत्वर लाभ भी हम प्राप्त कर सकते हैं ।

प्राणदाता, आरोग्यदाता–

कहते हैं भगवान शंकर ने देव–दनुजों की रक्षार्थ विष का प्याला उठाकर उसे स्वयं पी लिया था और अमृत देवताओं को बाँट दिया था । सम्भव हैं सतयुग में कोई ऐसी घटना घटित हुई हो पर घटना तो हम अभी देख रहे हैं कि वृक्ष निर्जीव होते हुए भी किस प्रकार मनुष्य के हिस्से में पड़े विष को पीते रहते हैं और उन्हें प्राण दान देते रहते हैं । हमारे ऋषियों ने कहा है कि मनुष्य की आयु वृक्षों की कृपा पर आधारित है, यह कथन अक्षरशः सत्य है । वैज्ञानिक भी इस बात से सहमत हैं कि मनुष्य की आयु को वृक्ष बहुत प्रभावित करते हैं ।

वह किस तरह ? इसका एक सूक्ष्म किन्तु विशद विज्ञान है । शंकर की तरह यह संसार का विष पीकर ही अपना जीवन धारण किए रहते हैं । पेड़ अपनी पत्तियों द्वारा साँस लेकर कार्बनडाई आक्साइड जो एक प्रकार का विष ही है, खींचते हैं और उसी के कारण वे फलते–फूलते और विकसित होते रहते हैं । कार्बनडाई आक्साइड मनुष्यों और पशुओं के मुँह और अपान मार्ग से निकली हुई दूषित वायु है । और भी अनेक प्रकार की गन्दगी और सड़न पैदा होकर वायु को विकारग्रस्त बनाती रहती हैं, यदि इस दूषित वायु को विषपायी वृक्ष पीने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से इन्कार कर दें तो हमारे ऊपर जितना १ घनफुट वायु का दबाव रहता है उतना ही इस दुर्गन्धित गैस का हो जाता और उस अवस्था में हमारा जीवित रह सकना भी सम्भव न होता ।

यह विभीषिका तब नहीं तो अब आने वाली है । एक ओर आबादी बढ़ रही है तो गन्दगी बढ़ रही है और उससे वायु मण्डल के विकार बढ़ रहे हैं । दूसरी ओर पेड़ कट रहे हैं तो उस विष को पचाने वाली प्राकृतिक क्षमता घट रही है, उसका प्रभाव जन–जीवन पर प्रकट है । अनेक तरह के लोग बढ़ रहे हैं और उनके लिए दवाओं की व्यवस्था पर आर्थिक दबाव बढ़ा रहा है, फिर भी रोगियों की संख्या कम नहीं हो रही है । अब निरोग व्यक्तियों की संख्या उँगलियों में गिनने योग्य बनती चली जा रही है । शरीर के किसी न किसी हिस्से के रोगी प्रायः सभी हैं, किसी का पेट ठीक नहीं, किसी का दिल ठीक नहीं, किसी का मस्तिष्क काम नहीं करता, किसी के फेंफड़े । तात्पर्य यह है कि रोग बढ़ रहे हैं, जो निरोग हैं भी उनके स्वास्थ्य भी सेरों में ही तौलने योग्य शेष रहा है । भीम, हनुमान, बालि, अंगद, घटोत्कच जैसे बज्र शरीर वाले अब कहीं देखने को नहीं मिल रहे । इसका कारण खाद्य की कमी, पौष्टिकता का अभाव नहीं वरन् प्राकृतिक दबाव है, अब कोई अच्छा से अच्छा खाकर और पूर्ण संयमित रह कर भी भीमसेन या बजरंगवली नहीं बन सकता ।

वृक्षों में जितनी क्षमता है, उतना विष पी रहे हैं, विष की मात्रा बढे, और वृक्ष घटें तो उनका क्या दोष ? दोष मनुष्य जाति का है जो अपने जागृत शंकर पर जल डालने की अपेक्षा उन पर कुल्हाड़ी चलाती है ।

वृक्ष हैं जो इतनी मार खाकर भी अपने धर्म से विचलित नहीं होते । ये केवल विष नहीं पीते, प्राण दान भी देते हैं । वृक्ष एक ओर कार्बनडाई आक्साइड पीते हैं तो दूसरी ओर आक्सीजन गैस छोड़ते हैं । आक्सीजन प्रकृति से पर्याप्त मात्रा में मनुष्य या अन्य प्राणियों को उपलब्ध न हो तो वे एक दिन भी जीवित नहीं रह सकते । श्वाँस द्वारा प्राप्त होने वाला यह अमृत हमें बहुत करके वृक्ष–वनस्पतियों द्वारा ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राप्त होता है । इस बात को जानते हुए भी लोग वृक्ष काटते हैं और उनकी संख्या दिनों दिन कम करते जा रहे हैं, यह बड़ी चिन्ता की बात है ।

वृक्ष या धनवन्तरि–

संसार में जितनी वनस्पति हैं वह सब औषधि रूप हैं । ऐसा आयुर्वेद ग्रन्थों में बताया गया है । इस रूप में छोटे–बड़े सभी पेड़–पौधे मनुष्य जाति की सेवा करते हैं । अनेक वृक्षों के फल जैसे–बेल, आँवला, नीम, बहेड़ा आदि औषधियों में प्रयुक्त होते हैं । अनेक के फूल काम आते हैं । कितने ही वृक्षों की डालियाँ और छालें दवाओं के काम आती हैं । पीपल आदि की समिधाओं से यज्ञ करके बड़े–बड़े राज–रोगों को दूर करने के विधान हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों में विस्तार से मिलते हैं । पहाड़ी इलाकों में पाये जाने वाले अनेक वृक्षों का उपयोग केवल औषधियों के रूप में ही किया जाता है । चन्दन की लकड़ियों की उपयोगिता और सुगन्ध प्रसिद्ध है । गूलर के फल, अंजीर के फल तथा जैतून के तेल की रोगनिरोधक शक्ति की वैद्य लोग बड़ी प्रशंसा करते हैं । तुलसी की मंजरी से लेकर जड़, पत्ते, फूल आदि औषधि रूप में बड़े उपयोगी माने जाते हैं । देवप्रिय आँवला, पीपल, तुलसी आदि मनुष्य के लिए इतने उपयोगी हैं कि इन्हें देवता कहकर उनकी पूजा और उपासना का भी विधान बताया गया है । नीम की चर्म–रोग निरोधक शक्ति से सभी परिचित हैं ।

वृक्ष मीठे फल देते हैं–

मनुष्य की सात्विक प्रवृत्तियों को प्रखर रखने में फलाहार का साधारण महत्व है । हमारे पूर्वज प्रमुख रूप से फलों पर ही अपना जीवन निर्वाह करते थे । यह फल वृक्षों से ही उपलब्ध होते हैं । कहना न होगा कि इस रूप में वृक्ष सामाजिक जीवन के नैतिक आधार हैं । व्रत और त्यौहारों पर फलाहार करने की आज भी परम्परा शेष बनी हुई है, पर अब वह 'न' के बराबर है । तीखे, नमकीन, कसैले और गरिष्ठ अन्नाहार पर लोगों की रुचि बढ़ रही है तो उससे लोगों के स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति पर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ रहा है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी फलों का महत्त्व असाधारण है । चिकित्सा शास्त्रियों का मत है कि यदि मनुष्य को फलों के साथ दूध की पर्याप्त मात्रा मिलती रहे तो फल उसके पूर्ण आहार का काम दे सकते हैं और मनुष्य जीवन भर पूर्ण स्वस्थ व निरोग बना रह सकता है ।

इसका कारण यह है कि उनमें विटामिन्स और शक्ति तत्वों की पर्याप्त मात्रा तो होती है, साथ ही फलों के रेशे में एक विशेष गुण यह होता है कि यह मल नहीं बढ़ाता वरन् उसे आमाशय से मलद्वार की ओर धकेल देता है । मलाधार साफ रहने से पेट में गैस बनना, पाचन क्रिया की खराबी, मानसिक विक्षिप्तता, उदर शूल आदि किसी तरह के रोग की सम्भावना नहीं । कुछ फल तो पेट के लिए औषधि से भी अधिक गुणकारी होते हैं । आम का कल्प कराया जाता है, जामुन से पेट की सफाई होती है, अमरूद में भी मल साफ करने की शक्ति है, आँवला रोगनाशक होता है, इसका भी कल्प कराया जाता है । "एक अनार सौ बीमार" की कहावत से सभी परिचित हैं । सेव, अंगूर, मौसम्मी, माल्टा, सन्तरा की शक्ति से सभी परिचित हैं । पपीता, आलू–बुखारा, अनन्नास, बग्गूगोसा, नासपाती, लीची, चीकू इनके स्वास्थ्य वर्धक गुणों से सभी लाभ उठाते हैं । इन फलों में रस रक्त को उष्णता, शक्ति और प्रखरता प्रदान करने वाले सभी गुण मिल जाते हैं । वृक्ष न हों तो यह प्रकृति का अमृत मनुष्य को कहाँ से उपलब्ध हो । वृक्ष हमें रसदार, मीठे, स्वादिष्ट तरह–तरह के फल प्रत्येक ऋतु में प्रदान करते हैं । इनकी इन सेवाओं की जितनी अधिक सराहना की जाये और कृतज्ञता प्रकट की जाय वह कम ही है ।

सौन्दर्य और कला प्रेरक–

वृक्षों की पंक्तियों और फूलों से मनुष्य को सौन्दर्य और कलापूर्ण जीवन की प्रेरणा मिलती है । सेमर फूलता है तो चाँदनी रात में उस स्थान की चारुता अनुपम हो उठती है, अमलतास के पुष्पों का गहन आच्छादन देखते ही बनता है । आमों की बौर, कचनार की शोभा, तगर, गुल्म, गुलाब, हरसिंगार, मोगरा, चमेली, जुही, चम्पा, कनेर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गेंदा, कमल इससे वातावरण की सुवास बढ़ती है । ये पुष्प मनुष्य को हँसना सिखाते हैं, प्रसन्नता प्रदान करते हैं, सुगन्ध बिखेरते हैं और मनुष्य को सौन्दर्य के प्रति प्रेम की प्रेरणा देते हैं । परमात्मा का मुक्त हास उन फूलों में ही विकसित हुआ है ।

फूलों से लोगों का स्वागत करने की प्रथा है । फूलों के गुलदस्ते से कमरे, ऑफिस सजाये जाते हैं । प्रेम के प्रतीक के रूप में लोगों को भेंट किए जाते हैं । पाश्चात्य देशों में दाम्पत्य प्रेम के रूप में, मंगल मिलन में पुष्पों का आदान–प्रदान होता है । भारतवर्ष में तो कोई भी धर्मानुष्ठान या मंगल कार्य फूलों के बिना सम्पन्न ही नहीं होता । देवता और भगवान तक फूलों को पाकर प्रसन्न होते हैं । मनुष्य की प्रवृत्तियों को इस प्रकार कलात्मक, सौन्दर्ययुक्त एवं ऊर्ध्वगामी बनाने वाले ये फूल भी वृक्षों की ही कृपा की देन है ।

आपके देव–हमारे अन्नदाता–

कुछ समय पूर्व का एक मार्मिक संस्मरण हमें जीवन–भर याद रहेगा । चकबन्दी के दौरान एक के वृक्ष–दूसरे के चक में चले गये दूसरे के तीसरे में । किसी को उनकी मालियत से सन्तोष न हुआ तो पेड़ कटा लिया, किसी ने मालियत देकर जमीन निकालने के उद्‌देश्य से कटा लिया । तात्पर्य यह है कि प्रतिदिन सैकड़ों पेड़ कटे । हमारे जिला फतहपुर में प्रतिदिन सैकड़ों पेड़ कटते हमने अपनी आँखों से देखे हैं । एक बगीचा ऐसा देखा जिसमें आम और महुए के लगभग ७५० आलीशान वृक्ष थे, पर सबके सब धराशयी हुए पड़े थे । ऐसा लगता था जैसे वह कोई प्रकृति की विनाश–लीला हो अथवा वृक्षों का मुर्दाघाट । इसी प्रसंग पर एक स्थान पर बैठे हुए बातें चल रही थीं । मैंने कहा–हमारे ऊपर बहुत बड़ा पाप चढ़ रहा है, लोग इन देवताओं को किस निर्ममता के साथ काटे जा रहे हैं ? पास में एक गाँव का मजदूर, कहने लगा–भैया ! आपके तो ये देवता हैं पर हमारे तो बाल–बच्चों की रोटी इन्हीं से चलती हैं, समझ में नहीं आता हमारा गुजारा कैसे चलेगा ?

उस मजदूर की बात सुनकर लोगों को आँखों में आँसू आ गये । इसमें अतिशयोक्ति नहीं, वृक्ष हजारों आदमियों को रोजगार देकर उनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेट पालते हैं । कुछ लोग उनकी लकड़ियाँ बेचकर गुजर करते हैं । कुछ लोग फल बेचते हैं । मालियों का पेशा तो मुख्य रूप से इन्हीं पर आधारित है । हजारों आदमी वृक्षों की कृपा पर रोटी–रोजी चला रहे हैं । वृक्ष न होंगे तो इस तरह की गरीबी और बेकारी बढ़ेगी ।

फसलों के रक्षक–

पहले लोगों के पास जोत के लिए जमीनों की कमी थी, पर उतनी–सी जमीन से ही काफी अन्न पैदा हो जाता था । अब जंगलों को काटकर अधिक जमीन कर ली गई है और फसलें भी काफी अच्छी उगती हैं, फिर भी अन्न की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध नहीं हो पाती इसका कारण भी वृक्षों को काटा जाना और वनों को साफ कर देना है, जिससे फसल के शत्रुओं की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है । सन् १९६३–६४ में उत्तर प्रदेश में चूहों ने फसल इतनी बरबाद की थी कि चारों तरफ किसानों में त्राहि–त्राहि मच गई थी । सरकार ने गाँव–गाँव दवायें भिजावाई, बिलों में चूहे मार गैस भरवाई, पर नतीजा कुछ नहीं निकला । किसी खेत से तो साबित बीज भी लौटकर नहीं आया ।

पहले जंगल अधिक थे, चूहे, जंगली जानवर, चिड़ियायें सब उन जंगलों के पेड़–पौधों से खाद्य सामग्री प्राप्त कर लिया करते थे । खेतों में घुसने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी । अब चूहे, चिड़ियाँ, जंगली बिलाव, नील गायें, सियार, जंगली सुअर, घरेलू जानवर सब घात निकाल कर खेत में खड़ी फसलों पर ही हमला करते रहते हैं, जिससे अन्न का बहुत बड़ा भाग इनके द्वारा नष्ट हो जाता है । हमारे वृक्षों की जब से पहरेदारी नष्ट हुई, अन्न संकट तभी से जोर पकड़ता जा रहा है ।

सर्दी, गर्मी और वायु के तापमान में सन्तुलन रखने का कार्य भी यह वृक्ष ही करते हैं और इसका भी प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर पूरा प्रभाव पड़ा है । अब इस दिशा में नई–नई परेशानियाँ पैदा हो रही हैं । सर्दियों में कड़ाके की शीत से पाले की लहर को रोकने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी यह वृक्ष निभाते थे, पर अब इनके बहुतायत से कटने का यह परिणाम हो रहा है कि हमारी फसल के एक बहुत बड़े हिस्से को शीत लहर खा जाती है या फिर कड़ी धूप में बीज अपनी अवधि से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले ही सूखकर हलका पड़ जाता है। प्रकृति की सर्दी–गर्मी में सन्तुलन बनाये रखने के लिए भी वृक्षों की सघनता अनिवार्य है।

पक्षियों के आश्रय स्थल–

गर्मियों की साँझ में जब वृक्षों में नई कोपलें फूटती और नये फल आते हैं तो उनमें पक्षियों का चहचहाना, कलरव करना, किलकारी भरना बड़ा मनोहर लगता है। प्रातःकाल जल्दी उठने के लिए किसानों के पास घड़ी नहीं होती तो समय की सूचना देने का काम भी ये बेचारे छोटे–छोटे पक्षी कर देते हैं। चार बजे तड़के से ही चहचहाने लगते हैं मानों प्रातःकाल की ईश्वरीय वन्दना कर रहे हों। पक्षी चहचहाये और किसानों ने अपनी बिस्तर छोड़े और अपने काम पर चल पड़े। शहरों में भी बड़े–बड़े पेड़ों पर प्रातःकाल और सायंकाल पक्षियों का चहचहाना बड़ा भला प्रतीत होता है और उससे इन सन्ध्याकालों में अपना काम, निद्रा और तन्द्रा त्याग कर परमात्मा की उपासना की प्रेरणा मिलती है। जिसके द्वार पर इस प्रकार पक्षियों के आश्रय–स्थल वृक्ष विद्यमान हों उन्हें अपने आपको सौभाग्यशाली मानना चाहिए।

शीतल और सुखद छाया–

गाँव हों या वन कठिन धूप में घने वृक्षों की छाया बड़ी सुखद मालूम पड़ती है। देहातों में लोग गर्मियों की दोपहरी वृक्षों के नीचे ही गुजारते हैं, ओस से बचाव के लिए भी लोग रात में वृक्ष के नीचे सोते हैं। नीम के वृक्ष की महत्ता इस दृष्टि से बहुत अधिक है। नीम की विशेषता यह है कि जहाँ इसकी छाया बहुत शीतल होती है, वहाँ वह रात में भी आक्सीजन ही प्रदान करता है, जब कि दूसरे प्रायः सभी वृक्ष रात में श्वांस–प्रश्वांस की क्रिया में परिवर्तन कर देते हैं। भारतवर्ष के गाँवों में अभी भी अधिकांश घरों के सामने नीम के वृक्ष देखने को मिलते हैं। यह आश्चर्य है कि नीम संसार में केवल भारतवर्ष में ही पाया जाता है।

बड़ी–बड़ी बारात टिकाने, सभायें आयोजित करने तथा विद्यालय चलाने के लिए बहुत से गाँवों में पेड़ों की छाया का ही उपयोग किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है । नीम और बरगद के पेड़ इनमें से मुख्य हैं । बरगद के कोई-कोई पेड़ तो दो-दो हजार वर्ष तक की आयु के होते हैं और इनका फैलाव इतना विस्तृत होता है कि उनके नीचे कई हजार व्यक्ति तक बैठ सकते हैं । गर्मी के मौसम में बेचारे पशुओं को दोपहर में विश्राम करने का कोई उपयुक्त स्थान नहीं, उन्हें यह पेड़ ही शरण देते हैं । जलाशयों के किनारे पीपल और बरगद के वृक्षारोपण करने का सम्भवतः पूर्वजों का यही उद्देश्य रहा है कि जेठ-वैशाख की तपती धूप और लू में पशु-पक्षी दोपहर में पानी पीकर वहीं सोकर वहीं विश्राम कर सकें । जीवों के प्रति इस प्रकार की दया भावना भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही है, इस परम्परा को अभी भी जीवित रखना चाहिए ।

वृक्ष नहीं, कर्ण और दधीचि कहिए-

हिन्दू धर्म में दान, बलिदान, आत्मदान और सर्वस्व दान की गौरव गाथाऐं भरी पड़ी हैं । कर्ण, दधीचि, सत्य हरिश्चन्द्र, मोरध्वज, बलि और वाजिश्रवा के त्याग और बलिदान से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं, तो महापुरुषों के प्रति श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है । समाज के लिए जीवन उत्सर्ग कर देने वालों के प्रति यह सम्मान कोई बड़ी बात नहीं, ऐसा करना तो जीवन का मुख्य कर्तव्य होना ही चाहिए । इस दृष्टि से इन पेड़ों की त्याग-वृत्ति भी कुछ कम नहीं । जड़ से लेकर फल-फूल तक सर्वस्व समाज के लिए होम देने की पुण्य साधना के प्रति जितनी श्रद्धा व्यक्त की जाय थोड़ी है ।

कदाचित् यह पेड़ पढ़े-लिखे होते और लेखनी चलाने की उनमें क्षमता रही होती तो उनके इतिहास में भी ऐसी करोड़ों गौरव-गाथायें लिखी गई होतीं । किस वृक्ष ने १०० वर्ष तक करोड़ों रुपये के फल दिये इसका उल्लेख होता, किसी की एक हजार वर्ष तक निरन्तर छाया, औषधि, फूल, लकड़ी, छाल आदि देने का उल्लेख होता और तब हम भी साधुवाद दिये बिना न रहते । सचमुच वृक्षों ने जो वरदान मानवता को दिये, दे रहे हैं और आगे देंगे, मनुष्य उनका कभी भी ऋृण न चुका सकेगा ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृक्षों का ऋण कैसे चुकायें ?–

शास्त्रीय आदेश, आध्यात्मिक महत्व और वृक्षों के अनन्त अनुदानों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उनकी रक्षा करें, और उन्हें एक बहुमूल्य सम्पत्ति मानकर उनकी समृद्धि का प्रयत्न करें । इसमें मानव जाति का बड़ा हित है । वृक्षों की सघनता जितनी बढ़ेगी उतना ही अधिक हमें आध्यात्मिक, प्राकृतिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ भी प्राप्त होंगे ।

श्रावणी पर्व और वृक्षारोपण–

पर्व मनाने और उन अवसरों पर विशेष पुण्य प्रयोजन रखने की परम्परा हमारे भारत देश में बहुत ही प्राचीनकाल से चली आ रही है । श्रावणी पर्व का महत्व इनमें से सर्वाधिक है । उस दिन अपनी ऋषियों, पितरों, को श्रद्धा समर्पित करते हैं । आचार्यों ने देखा कि वृक्ष परोपकार के प्रतीक हैं जो बिना मोल माँगे मनुष्यों–पशुओं को छाया, फल, हरियाली प्रदान करते हैं इसके अतिरिक्त और भी अनेक लाभ वृक्षों से मिलते हैं । मानव–जीवन में वृक्ष, वनस्पतियों का बहुत बड़ा हाथ है । भोजन, वस्त्र, निवास आदि में वृक्षों का ही योगदान अधिक रहता है इसलिए वृक्षारोपण, उनका पूजन एवं अधिकाधिक हरियाली पैदा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है ।

श्रावणी पर्व पर इस कर्तव्य की पूर्ति का एक निश्चित विधान आदिकाल से चला आ रहा है, पर अब उसे बहुत थोड़े क्रिया काण्ड के रूप में मना लिया जाता है । उसके व्यावहारिक पहलू यों ही अछूते रह जाते हैं । इस पुण्य पर्व पर प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को एक वृक्ष लगाना चाहिए, उसका पूजन करना चाहिए और जब तक वह इतना समर्थ न हो जाय कि अपनी खुराक आदि स्वयं ग्रहण करने लगे, तब तक उसे खाद, पानी, मिट्टी और पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करते रहना चाहिए । देश की आबादी में से यदि पचास प्रतिशत व्यक्ति भी इस पर्व पर अपनी रचनात्मक श्रद्धाञ्जलि प्रति वर्ष प्रस्तुत करते रहें और २० करोड़ वृक्ष हर साल लगाते रहें तो यह धरती सचमुच फिर से शस्य–श्यामला बन जाये । व्यक्तिगत रूप से यह कार्य हर हिन्दू को करना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृक्षारोपण सप्ताह–

सामूहिक रूप से वृक्षारोपण सप्ताह भी मनाने चाहिए । ऐसे आयोजन धार्मिक रहें तो और भी अच्छा है । इसके लिए श्रावणी के आस–पास का समय ही अधिक उपयुक्त है । इन दिनों लगाये हुए वृक्षों की जड़ें आसानी से मिट्टी पकड़ लेती है और उन्हें पानी आदि देने की भी जरूरत नहीं रहती ।

सप्ताह के कार्यक्रमों को तीन भागों में विभक्त कर दिया जाय ।

(१) धर्मानुष्ठान–अर्थात् प्रातःकाल लोग एकत्रित हों और यज्ञ, कथा, कीर्तन आदि के माध्यम से ईश्वर की सामूहिक प्रार्थना करें, धर्माचरण की प्रेरणा माँगें और युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ करें । थोड़े से प्रसाद आदि के वितरण की व्यवस्था हो सके तो वह और भी अच्छी बात है ।

(२) सभा का आयोजन किया जाय जिसमें अधिक से अधिक लोगों को इकट्ठा कर वृक्षों के धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं अन्यान्य लाभों से अवगत कराया जाय और उन्हें वृक्षारोपण की प्रेरणा, हरे वृक्ष न काटने के सुझाव दिये जायें । रूपक दृष्टान्त देकर लोगों को समझाया जाय, वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी और आँकड़े दिये जायें । उपलब्ध हो सके तो इस प्रकार का साहित्य भी लोगों को पढ़ाया जाय । पहले से वृक्षों के महत्व बताने वाले पर्चे छपवाकर रखे जायें और उन्हें लोगों में बाँटा जाये । वृक्षों की परोपकार सम्बन्धी कविताऐं छापी जायें और उनका भी वितरण हो ।

(३) सामूहिक रूप से वृक्षारोपण किये जायें । गाँव के किन्हीं वयोवृद्ध, अध्यापक, सरपंच अथवा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति से वृक्षारोपण कराये जायें और उनका घी, धूप, दीप से पूजन कर हर्ष मनाया जाये । इस तरह के कार्यक्रम एक सप्ताह तक चलाये जायें तो उससे जनता में एक रचनात्मक वातावरण का विकास हो सकता है ।

कीर्ति स्तम्भ, स्मृति स्तम्भ–

पुण्य आत्माओं और प्रतापी पुरुषों की यादगार में कीर्ति–स्तम्भ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाये जाते हैं । ऐसे स्तम्भ अधिकांश मिट्टी, गारे और पत्थर के बने होते हैं । इनमें खर्च भी काफी होता है और धीरे-धीरे इनका महत्व भी कम होता जाता है । आवश्यक संरक्षण न मिले तो ये जल्दी ही टूट-फूट कर खण्डहर हो जाते हैं और उनका नाम निशान भी मिट जाता है । इस दृष्टि से वृक्षों के कीर्ति-स्तम्भ अधिक सुन्दर हो सकते हैं, इनमें खर्च भी कम होता है और किफायत भी उतनी नहीं करनी पड़ती है । यह वृक्ष किसके नाम पर लगाया गया है, भले ही लोग इस बात को न जानें पर उससे अनायास ही अनेक प्राणियों की जो सेवा होगी उससे उस स्वर्गीय आत्मा को भी सुख-शान्ति मिले बिना न रहेगी जिसके नाम पर वह लगाया गया है ।

अपने परिवार के किन्हीं प्रियजन की याद में मृतक-श्राद्ध के रूप में इस तरह के स्मृति स्तम्भ बड़े प्रेरणादायक सिद्ध हो सकते हैं और उससे जन मानस में एक नये तरह की पुण्य भावनाओं का पोषण हो सकता है । मृतात्माओं के लिए दुःख न करके इस प्रकार श्रद्धा व्यक्त करने का तरीका कहीं अधिक सुन्दर है ।

घरों के आस-पास विद्यालय और देवालय-

व्यक्तिगत रूप से अपने घरों के सामने तो जितना स्थान उपलब्ध हो सके उसमें जितने वृक्ष लगाये जा सकें उतना ही अच्छा । घर के आस-पास पेड़ होते हैं तो उसकी शोभा बढ़ती है, छाया मिलती है, वायु स्वच्छ रहती है और भी बहुत से लाभ हैं । इनकी देख-भाल भी कुछ कठिन नहीं । नीम के वृक्ष तथा फलदार पौधे तो यथासम्भव हर घर के सामने रहें ही ।

अध्यापक विद्यालय की भूमि में कलात्मक ढंग से आम, महुआ, नीम, जामुन, पाकर, अमलतास के वृक्ष और छोटे-छोटे फल वाले पौधे जैसे अनार, अंगूर, संतरा, नींबू, पपीता, केला, अमरूद आदि की वाटिकायें लगवा सकते हैं । इसके लिए बुनियादी शिक्षा क्रम में एक घण्टा बागवानी के लिए रखा भी जाता है, इस समय का उपयोग करना चाहिए ।

ऐसा कोई देवालय और जलाशय न रहे जो वृक्षों से घिरा न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो । इनमें फूलों वाले छोटे पौधे तो रहें ही साथ ही बड़ी झाड़ वाले वृक्ष भी रहें । इन्हें इस दृष्टि से लगाया जाय जिससे देखने में भी अच्छे लगें और यदि कभी अनुष्ठान आदि रखे जायें तो उस समय लोगों को पर्याप्त छाया और बैठने के स्थान की भी गुन्जायश बनी रहे ।

बड़े बाग और उनकी व्यवस्था–

गाँवों में लम्बी उम्र के वृक्ष जैसे आम, महुआ, जामुन, गूलर, पीपल, पारवर, सेमर, इमली बरगद और फलों वाले बाग अलग–अलग अथवा सम्मिलित रूप से लगाए जाने चाहिए । सरकार की ओर से जितनी जमीन में बाग होता है, उसका लगान भी नहीं लिया जाता या लिया जाता है तो कम । यह कार्य अधिक श्रम व श्रमसाध्य भी नहीं है । एक–दो एकड़ भूमि में चारों ओर से ४–५ फुट ऊँची दीवार उठाकर उसमें नागफनी या अन्य कँटीली झाड़ियाँ लगाकर बाउण्डरी बना ली जाये और बीच में गड्ढे खोद लिए जायें । उनमें अच्छी मिट्टी और खाद डालने से वृक्षारोपण की तैयारी हो जाती है ।

जब बरसात आती है तो अपने नजदीक के शहर के किसी पौध घर से फलों के पौधे लाकर अपनी रुचि के अनुसार इन गमलों में लगा दिये जायें । आमतौर पर एक–दो बरसातों में ये अपनी जड़ें जमीन में गहराई तक जमा लेते हैं उस समय अधिक देखरेख की जरूरत भी नहीं रहती । पानी की सिंचाई के लिए बाग के अन्दर ही एक कुआँ रहे और उससे सप्ताह या १५ दिन में एक बार इनकी सिंचाई की जाती रहे और समय–समय पर थोड़ी–थोड़ी खाद दी जाती रहे तो दो–तीन वर्ष में ही एक सुन्दर बाग तैयार हो सकता है ।

तुलसी और तुलसी कानन–

तुलसी के लाभ और महत्त्व से हर हिन्दू परिचित है । किसी समय में हर घर में कम से कम एक तुलसी का बिरवा अवश्य होता था और बिना उसे जल दिए लोग अन्न ग्रहण नहीं करते थे । तुलसी का पौधा इतना छोटा होता है कि उसके लिए जमीन की कमी का प्रश्न किसी के सामने नहीं हो सकता । शहरों में जहाँ स्थान की बड़ी कमी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहती है, वहाँ भी निष्ठावान लोग गमलों में तुलसी का पौधा लगाकर रखते हैं। वह कार्य कुछ मुश्किल नहीं है। हर गृहस्थ दो–तीन गमले बड़े मजे से अपने घर में लगाये रख सकता है। गाँवों में इसके लिए स्थान भी दिया जा सकता है।

तुलसी आन्दोलन को मुख्य रूप देना चाहिए। इसके लिए जिनके पास अधिक स्थान उपलब्ध हो उन्हें तुलसी कानन लगाने चाहिए। किसानों को तुलसी की खेती के लिए एक दो बीघे जमीन रखने की प्रेरणा भी देनी चाहिए। इसकी डाल, पत्तियों तथा बीजों की छोटी–छोटी दवाऐं बनाकर रखनी चाहिए और उनका प्रयोग बढ़ाना चाहिए। तुलसी कानन से छोटे–छोटे पौधे निकाल कर गमलों में लगाकर ऐसे बहुत से घरों में जो तुलसी लगाने में आलस्य दिखायें उन्हें बाँटने चाहिए और उन्हें नियमित रूप से उसमें जल डालने, पत्तियाँ सेवन करने, पौधों की सुरक्षा रखने, अगरबत्ती जलाने और आरती करने की भी प्रेरणा देनी चाहिए। जो लोग चाय पीने के अभ्यस्त हों उन्हें चाय की पत्तियों के स्थान पर तुलसी की पत्तियों का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। तुलसी और उससे लाभ की विस्ततृ जानकारी देने के लिए युग निर्माण योजना द्वारा प्रकाशित पुस्तक "तुलसी के चमत्कारी गुण" से इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी और मार्ग–दर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

हम नये वृक्ष और बगीचे लगायें और दूसरों को प्रेरणा दें, यह तुक की बात है, पर कम से कम इतना तो सभी करें कि हरे वृक्ष न काटे जायें। इसे भी एक प्रकार की अमानवीयता ही कहना चाहिए। वृक्ष लगाने का पुण्य प्राप्त न करें, तो उनके काटने के पाप से भी हमें बचना चाहिए।

वन सम्पदा का संरक्षण भी आवश्यक है

भारतीय सभ्यता–संस्कृति में वनश्री को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। हमारे यहाँ पीपल, वट आदि वृक्षों की पूजा भी प्रचलित है। भारत के भिन्न–भिन्न प्रदेशों में चैत्र एकादशी तथा अन्य अवसरों पर इस प्रकार की पूजा की जाती है। कई वृक्षों की लकड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जलाई नहीं जाती । उन्हें काटना पाप माना जाता है । पीपल और वट को जल चढ़ाया जाता है । तुलसी के पौधे को आज हमारे घरों में महत्त्वपूर्ण स्थान मिला हुआ है । उसके तले सन्ध्या को दीपक जलाया जाता है । उपासना के पश्चात् अर्घ्य दान के लिए वृक्षों व पौधों पर जल चढ़ाया जाता है ।

इन परम्पराओं के पीछे यदि कोई महत्वपूर्ण तथ्य है तो वह यही है कि मनुष्य वनों का, वृक्षों का महत्व समझे । अपने स्वास्थ्य व समृद्धि के साथ जुड़े हुए इस प्रकृति गत संरचना का महत्व समझे । हमारे धर्म ग्रन्थों में यत्र-तत्र वनों की महिमा वर्णित है क्योंकि हमारे महत्व पूर्ण आर्ष ग्रन्थों की रचना तपोवनों में ही हुई थी । हमारी देवोपम संस्कृति का उद्‌गम, उद्‌भव व विकास वन क्षेत्र से ही हुआ था ।

आर्थिक और अन्यान्य दृष्टिकोणों से भी देखें तो हमें ज्ञात हो जायेगा कि वन सम्पदा का हमारे लिए कितना महत्व है और उसका संरक्षण, संवर्धन कितना आवश्यक ।

भोजन के बिना मनुष्य कुछ दिनों तक जीवित रह सकता है, जल के बिना भी कुछ समय तक जीवित रह सकता है, किन्तु वायु के बिना वह कुछ ही क्षणों में मर जाता है । मनुष्य के लिए जो प्राणवायु चाहिए वे पेड़ पौधे ही प्रदान कर सकते हैं । वायुमण्डल में जो ऑक्सीजन है उसे मनुष्य साँस लेकर कार्बनडाई ऑक्साइड में बदल देता है । वह कार्बनडाई ऑक्साइड जो मनुष्य के लिए प्राणघातक है, पेड़ पौधे स्वयं भक्षण करके पुनः मनुष्य के साँस लेने व जीवित रहने के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन प्रदान करते हैं ।

प्रकृति के इस चक्र को मनुष्य इन दिनों बुरी तरह विश्रृंखलित कर रहे हैं । मनुष्य ही नहीं अब तो उसके द्वारा बनाये गये कल-कारखाने व भवन टनों दूषित वायु वातावरण में छोड़ते रहते हैं जिससे ऑक्सीजन की मात्रा कम पड़ती जाती है । यदि मनुष्य ने अपने अति आवश्यक खाद्यान्न शुद्ध वायु पाने के लिए वनों का क्षेत्र जनसंख्या तथा कल-कारखानों के साथ-साथ बढ़ाया नहीं तो उसके स्वास्थ्य के लिए यह बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो जायेगा । वायु प्रदूषण का सबसे मोटा इलाज वनों की समृद्धि है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाद्य पदार्थों के लिए हमें कृषि पर निर्भर रहना होता है । वर्षा करने में वनों का महत्वपूर्ण स्थान है । महासागरों से जो मानसून उठते हैं वे वनों के द्वारा शीतलता पाकर ही वर्षा करते हैं । यही कारण है कि सरकार ने इस तथ्य को ध्यान में रखकर वनों को सुरक्षित रखने की गरज से प्रथक से वन विभाग खोला है तथा एक निश्चित सीमा तक वन क्षेत्र बनाये रखा है । हमारी आर्थिक समृद्धि वनों के साथ जुड़ी होने से हमें इस ओर पूरा-पूरा ध्यान देना ही चाहिए ।

जब मूसलाधार वर्षा होती है तो भूमि का तल कट-कट कर सागर के पेट में पहुँचने लगता है । धरती माता के इस उपजाऊपन का क्षरण उसे वन्ध्या बना देने को पर्याता होता है किन्तु ये वन ही उसे इस क्षरण से बचाते हैं । वृक्ष अपनी जड़ों से भूमि को बाँधे रहते हैं उसे कटने नहीं देते । पर्वतों पर वृक्ष न रहे होते तो उनका जीवन आधा ही रह जाता । अतः वनस्पति लगाने का अर्थ है भूमि की उर्वरा शक्ति का रक्षण करना और वन काटने का अर्थ है उसे वन्ध्या बनने का अभिशाप दे देना ।

वनों से कई प्रकार की सम्पदाऐं मनुष्य को मिलती हैं । नार्वे, स्वीडन तथा रूस के कोणधारी वनों के क्षेत्रों के निवासियों का जीवन तो वनों पर ही आधारित है । उनकी अर्थ-व्यवस्था वन उद्योग पर ही टिकी हुई है ।

वनों से मूल्यवान इमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी, लाख, गोंद, रेशम, कत्था, फल-फूल, वनौषधियाँ आदि मिलती हैं । इनमें कितने ही वनचारी पशु-पक्षी रहते हैं । कितनी ही अरण्यवासी जनजातियों का जीवन इन वनों पर ही आधारित हैं । थोड़ी देर के लिए यह कल्पना करें कि वनों से मिलने वाली लकड़ी आदि उपजें हमें मिलना बन्द हो जाँय तो हमारी क्या स्थिति होगी तो हम उस कल्पना से ही सिहर जायँ । किन्तु यदि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ वनों की, वनस्पतियों की वृद्धि आँकी गयी तो वह दिन आने वाला है जब हमारे हिस्से में बहुत कम वन क्षेत्र रह जायेगा । लकड़ी की बढ़ती हुई कीमतें तथा कमी इसी बात की पूर्व सूचना है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे देश में जितना वन क्षेत्र होना चाहिए उतना नहीं है । हमारे यहाँ २, ७४, ००० वर्गमील पर ही वन है । यह देश के समूचे क्षेत्र फल का २२ प्रतिशत ही है जो बहुत कम है । साथ ही साथ प्रति एकड़ वनोत्पादन भी बहुत कम है । हमारे यहाँ प्रति एकड़ वनोत्पत्ति २५ घन फुट है जबकि फ्रांस में ५६.८ घन फुट, जापान में ३० घन फुट है । कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे वन उतने सघन नहीं हैं जितने होने चाहिए ।

वनों से ही धरती की सुन्दरता निखरती है । प्राकृतिक स्थलों में जो नैसर्गिक सुषमा, सौन्दर्य तथा रमणीयता देखने को मिलती है, वह बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं व सुन्दर महानगरों में कहाँ देखने को मिलती है । प्राकृतिक स्थलों में पहुँचते ही, हरीतिमा के दर्शन होते ही चित्त आल्हाद से भर उठता है । यही कारण है कि नगरीय सभ्यता से ऊबा हुआ, त्रस्त हुआ व्यक्ति शान्ति पाने के लिए हिल स्टेशनों की ओर भागता है । माँ से बिछुड़े हुए शिशु की जो स्थिति होती है वही स्थिति मनुष्य की हो जाती है और वह पुनः माँ प्रकृति की गोद में शान्ति पाने के लिए दौड़ पड़ता है ।

मोटे तौर पर वनों तथा वनस्पति जगत से मनुष्य को मिलने वाले लाभों का वर्णन ऊपर किया गया है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वनों का, वृक्षों का मनुष्य के जीवन के साथ अटूट सम्बन्ध है । यह सम्बन्ध जीवन–मरण के प्रश्न जैसा महत्वपूर्ण है । अतः हमें बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती यान्त्रिक सभ्यता के साथ–साथ वनों का वृक्षों का संरक्षण, अभिवर्धन करने के लिए समय रहते ही सचेष्ट हो जाना चाहिए ।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ तीन महीने ही वर्षा होती है और वह भी अनिश्चित–सी । अतः वन संरक्षण की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया गया तो हमें निकट भविष्य में अकाल का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए । विशेषतः भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए तो वन ही अन्नदाता हैं । प्राचीनकाल में जब कि देश में वनों की बहुलता थी, वनवासी तपस्वियों का समस्त योगक्षेम वनों पर ही आधारित था । भोजन, छाजन यहाँ तक कि वस्त्र भी जंगलों से ही प्राप्त होते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थे । कन्द–मूल, फल–पत्ते आदि का सात्विक आहार, बाँस, ताड़ एवं वट आदि से कुटीर, भोजपत्र, केला पत्र एवं कमल पत्र से वस्त्रों की आवश्यकता पूरी की जाती थी । गुरुकुलों के आचार्य और राजकुलों के राजकुमार अभिजात्य वर्ग के छात्र अपने अध्ययन काल में सम्पूर्णतः वनों पर ही आधारित रहते थे । इस प्रकार तत्कालीन समाज का प्रबुद्ध वर्ग अपने जीवन का अधिकांश समय वनों में ही व्यतीत करता था ।

राज्यों की सीमाओं के वन प्रदेश अलंघ्य होते थे । सुरक्षात्मक दृष्टि से किसी भी राज्य के लिए वनों का अत्यन्त महत्व था, इसीलिए वनों की रक्षा के लिए विशेष चौकी पहरे का प्रबन्ध होता था । सेना के वाहनों घोड़े तथा हाथियों का चारा–पानी पूर्णतः इन्हीं जंगलों से प्राप्त होता था । यदि यह कहें कि प्राचीन भारत के समस्त निवासियों का भरण–पोषण जंगलों पर ही आधारित था तो कोई अतिशयोक्ति न होगी ।

आज भी ईंधन, इमारती लकड़ी, औषधि, जड़ी–बूटी, गोंद, लाख, मधु तथा अन्य कई महत्वपूर्ण उद्योगों का कच्चा माल वनों से प्राप्त होता है । बीड़ी का तो समस्त उद्योग जंगलों पर ही निर्भर है । इस भाँति देश की जनसंख्या के अधिकांश भाग की रोटी–रोजी जंगलों से ही चलती है ।

विदेशी पर्यटकों के लिए भारत के जंगल अफ्रीका महाद्वीप के जंगलों से अधिक विचित्र और अधिक मनोहर हैं । जंगलों के शान्त और निरापद वातावरण में भारतीय तत्वदर्शियों ने प्रकृति के गहनतम रहस्यों का अध्ययन किया है । श्री, समृद्धि के कुबेर इन वन प्रदेशों का संरक्षण जनता एवं सरकार दोनों का अनिवार्य उत्तरदायित्व है, किन्तु यह उत्तरदायित्व केवल सरकार पर ही नहीं छोड़ा जा सकता । सरकार के काम अपने ढंग से होते हैं और सरकार भी तो जनता के आदमियों द्वारा ही चलती है । वनों का महत्व समझ लेने पर सरकार व जनता दोनों की तरफ से वन संरक्षण का काम हो सकता है । सरकार भी वनों से लाभ उठाने के लिए ठेकेदारों को लकड़ी कटाई के ठेके देती है, उनमें भी पूरी–पूरी सावधानी रखने की आवश्यकता है । नहीं तो वनों की सघनता को खतरा उत्पन्न हो सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनों की अन्धाधुन्ध कटाई रोक कर उन्हें सघन बनाने का प्रयास होना चाहिए । यदि हम वन क्षेत्र को बढ़ा न सके तो कम से कम उन्हें विरल हाने से तो रोकना ही चाहिए । अभी तक अधिकांश जनता खाना पकाने के लिए लकड़ी तथा लकड़ी के कोयले जलाती है । इससे हमारी वन सम्पदा को बहुत हानि पहुँचती है । इसी गति से यदि ईंधन की खपत होती रही तो निकट भविष्य में हमारे सामने ईंधन की समस्या विकराल होकर आयेगी । अतः भोजन पकाने में कम से कम ईंधन लगे ऐसी पद्धति को अपनाया जाना आवश्यक है । भाप द्वारा पकाये जाने की विधि में लगभग एक तिहाई ईंधन ही खर्च होता है । नगरवासियों के लिए भाप द्वारा भोजन पकाने के उपकरण मँहगे होते हुए भी ईंधन की बचत को देखते हुए सस्ते ही पड़ते हैं । अतः इनका उपयोग करना लाभकारी है ।

जहाँ फलों के बगीचे लगने की सुविधा है, जलवायु अनुकूल है, वहाँ खाद्यान्न तथा अन्य फसलें न उगाकर फलों के बगीचे लगाने पर ही कृषकों को ध्यान देना चाहिए । यों भी कम उपजाऊ भूमि पर आम, अमरूद, बेर आदि के बाग लगाकर अधिक व स्थाई लाभ कमाया जा सकता है । इस प्रकार देश की वानस्पतिक सम्पदा में अभिवृद्धि होगी ।

देश की घटती हुई वन सम्पदा को दृष्टिगत रखकर स्वर्गीय कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने वन महोत्सव कार्यक्रम प्रतिवर्ष मनाने का अभियान चलाया था, किन्तु वह अभियान अभी तक सरकारी क्षेत्रों तक ही सीमित होकर रह गया है । यों यह अब भी प्रति वर्ष मनाया जाता है । पेड़ लगाये जाते हैं, किन्तु यह मात्र आँकड़े पूरे करने की बात बनकर रह गई है । इसे जनता का अभियान बनाने की आवश्यकता है । प्रत्येक समझदार व्यक्ति को अपने इस दायित्व को समझना चाहिए ।

हम अपने खाने जितना अन्न उगाते हैं, या नहीं उगाते तो उसे मेहनत की कमाई खर्च करके खरीदते हैं । तो हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम जितनी सांस लेते हैं, जितनी वायु गन्दी करते हैं, जितनी प्रकृति प्रदत्त लकड़ी जलाते हैं, उतनी ही वन सम्पदा की वृद्धि भी करें नहीं तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक प्रकार का प्रकृति द्रोह व भावी सन्तति के हित में अपराध होगा । हम उनके हक पर डाका डाल गये ।

जनता के सजग सचेष्ट रहने की आवश्यकता है कि वर्तमान वन कटने व विरल होने से बचे रहें । वृक्षारोपण परम पुनीत कार्य है । पुण्य लाभ हर कोई व्यक्ति कर सकता है । कम से कम जितनी लकड़ी काम में लेते हैं, उतनी क्षति पूर्ति तो हमें करनी ही चाहिए ।

सम्राट अशोक एवं उनके पश्चात् १५वीं शताब्दी तक वृक्षारोपण को एक धार्मिक कृत्य के रूप में महत्व दिया जाता रहा । हरे वृक्ष को काटना मनुष्य की हत्या कर देने जैसा जघन्य कृत्य समझा जाता था । अनावश्यक रूप में वृक्ष की पत्ती को तोड़ना भी नैतिक दृष्टि से अपराध ही समझा जाता था ।

१५ वीं शताब्दी में जबकि देश पर मुस्लिम शासकों का आधिपत्य था । शेरशाह, अकबर, जहाँगीर आदि मुस्लिम सम्राटों ने समस्त राजपथ के दोनों ओर विशाल और सघन छायादार वृक्ष लगवाये । स्थान-स्थान पर नवीन उद्यान लगाकर देश की श्री और सुषमा की अभिवृद्धि की । काश्मीर का शालीमार एवं निशात बाग आज भी इसके साक्षी हैं । पिछली दो शताब्दियों में वृक्षों को बड़ी निर्दयता से काटा गया है, जिसका दुष्परिणाम आज हमारे सामने है । किसी समय वृक्ष के स्वतः सूख जाने पर उसकी लकड़ी काम में लाई जाती थी किन्तु पिछली इन दो-तीन दशाब्दियों में तो सैकड़ों वर्ग मील में फैले हुए वनों को काटकर काश्त की जा रही है, जो कि राष्ट्रीय स्तर पर कोई अधिक मुनाफे का सौदा साबित नहीं हुआ है । बढ़ती हुई आबादी को अन्न पैदा करने की दृष्टि से यदि इसे उचित मान भी लिया जाय तो दूसरी ओर मरुस्थल का बढ़ना, चरागाहों की कमी तथा वर्षा की कमी घोर व्यापक विभीषिका बनती जा रही है । किन्तु सन्तोष है कि देश के कुछ मनीषियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ । उन्होंने वर्षा तथा वनों को एक-दूसरे का पूरक सिद्ध करके सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया ।

रोम, बैबीलोन तथा फारस के विद्वानों ने भी वर्षा के लिए वनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के संरक्षण को शासन का प्रमुख उत्तरदायित्व बताया और अपने देश की सरकारों को इस बात के लिए बाध्य किया कि राष्ट्र की समृद्धि के लिए वृक्षारोपण एवं वन संरक्षण को प्रमुख राजकीय उत्तरदायित्व समझा जाय । भारतवर्ष में भी तत्कालीन खाद्य मंत्री श्रीकन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने वृक्षारोपण की योजना बनाई और अधिक वर्षा के लिए वन महोत्सव आन्दोलन का शुभारम्भ किया । आज परिस्थितियों का तकाजा है कि हम इस आन्दोलन को अपना पुनीत कर्तव्य एवं अनिवार्य उत्तरदायित्व समझें और तन-मन-धन से सरकार को सहयोग देकर राष्ट्र को सुखी एवं समृद्ध बनाने में भागीदार बनें ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org